

मेरा प्रिय त्योहार : दीपावली

अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व

रूपरेखा

1. प्रस्तावना · 2. दीपावली मनाने का कारण · 3. तैयारियाँ · 4. पाँच दिनों का उत्सव · 5. दीपावली की रात · 6. सावधानियाँ और हरित दीपावली · 7. उपसंहार

तमसो मा ज्योतिर्गमय — हे प्रभु, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

— बृहदारण्यक उपनिषद्

प्रस्तावना

भारत त्योहारों का देश है। यहाँ वर्ष भर कोई न कोई पर्व मनाया जाता है, और हर त्योहार अपने साथ नई उमंग लेकर आता है। होली के रंग, ईद की सेवइयाँ, क्रिसमस की रोशनी और गुरुपर्व का कीर्तन — सब हमारे जीवन को रंगीन बनाते हैं। इन सबमें मुझे दीपावली सबसे अधिक प्रिय है।

दीपावली का अर्थ है “दीपों की पंक्ति”। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है, जब सबसे अँधेरी रात को लाखों दीये जगमगाकर उजाले में बदल देते हैं।

दीपावली मनाने का कारण

मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके और रावण पर विजय प्राप्त करके अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने पूरे नगर को दीपों से सजा दिया था। तभी से यह पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

जैन धर्म में यह दिन भगवान महावीर के निर्वाण से जुड़ा है और सिख समुदाय इसे “बंदी छोड़ दिवस” के रूप में मनाता है। इस प्रकार दीपावली अनेक परंपराओं को एक सूत्र में पिरोने वाला पर्व है।

तैयारियाँ

दीपावली की तैयारी कई दिन पहले से शुरू हो जाती है। घरों की साफ़-सफ़ाई और रंगाई-पुताई होती है। हमारे घर में माँ पूरे घर को व्यवस्थित करती हैं और मैं तथा मेरी छोटी बहन पुराने सामान को छाँटकर ज़रूरतमंदों को देने के लिए अलग करते हैं।

बाज़ार रंग-बिरंगी झालरों, मिट्टी के दीयों, मिठाइयों और उपहारों से सज जाते हैं। हर ओर चहल-पहल रहती है। हम रंगोली के लिए रंग और कुम्हार काका से मिट्टी के दीये खरीदते हैं।

पाँच दिनों का उत्सव

दीपावली वास्तव में पाँच दिनों का उत्सव है, और हर दिन का अपना महत्व है।

- धनतेरस — इस दिन नए बर्तन या धातु की वस्तुएँ खरीदना शुभ माना जाता है।
- नरक चतुर्दशी — इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं; घर के कोनों में दीये जलाए जाते हैं।
- दीपावली — संध्या को लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है और पूरा घर दीपों से जगमगाता है।
- गोवर्धन पूजा — अन्नकूट बनाकर प्रकृति और पशुधन के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है।
- भाई दूज — बहनें भाइयों को तिलक लगाकर उनकी लंबी आयु की कामना करती हैं।

दीपावली की रात

दीपावली की शाम हमारे घर का सबसे सुंदर समय होता है। हम सब नए कपड़े पहनकर पूजा में बैठते हैं। पूजा के बाद हम छत, आँगन और दरवाज़े पर दीयों की कतारें सजाते हैं। माँ के हाथ के बने लड्डू और दादी की बनाई गुझिया का स्वाद पूरे वर्ष याद रहता है।

इसके बाद हम पड़ोसियों और रिश्तेदारों को मिठाई देने जाते हैं। सब एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। उस रात पूरा मोहल्ला एक परिवार जैसा लगता है।

सावधानियाँ और हरित दीपावली

उत्साह में हम कभी-कभी ऐसी गलतियाँ कर बैठते हैं जिनसे दूसरों को कष्ट होता है। तेज़ आवाज़ वाले पटाखे बुजुर्गों, बीमारों और पशु-पक्षियों को डराते हैं तथा धुएँ से हवा ज़हरीली हो जाती है।

पिछले दो वर्षों से हमारे परिवार ने पटाखे न चलाने का निर्णय लिया है। उस पैसे से हम पास की बस्ती के बच्चों के लिए मिठाई और किताबें ले जाते हैं। सच कहूँ तो उनकी मुस्कान देखकर जो खुशी मिलती है, वह किसी आतिशबाज़ी से कम नहीं।

हरित दीपावली के लिए

मिट्टी के दीये जलाएँ, फूलों और प्राकृतिक रंगों से रंगोली बनाएँ, और उपहारों की पैकिंग में प्लास्टिक से बचें।

उपसंहार

दीपावली केवल दीये जलाने का त्योहार नहीं है। यह हमें सिखाती है कि हम अपने भीतर के अंधकार — क्रोध, ईर्ष्या और आलस्य — को भी दूर करें और ज्ञान तथा प्रेम का प्रकाश फैलाएँ।

यही कारण है कि दीपावली मेरा सबसे प्रिय त्योहार है। मेरी कामना है कि हर वर्ष यह पर्व सबके जीवन में सुख, समृद्धि और सद्भाव का उजाला लेकर आए।